वैद्यकाचा ग्रंथ — हकीम फरासीस्व —

" Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai. "

①

श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीसरस्वत्यैनमः॥ अथ वेदशास्त्र हकीम फरासीस नाम सुत विरंचले वरहहक ईजुल पुराणे नामइ॥ अथ रितु विचार लिष्यते। सरीरको भेद लिख्यते। सरीरमे चार कोठा है॥ येक कोठा अगन है। तहा [illegible] होत है। दुसरे कोठामे अंन्न रहत है। तीसरे मे जाईके भस्म होत है॥ चौथे जाइके मल बधत है॥ प्रथम जलको कोठा ताकी दोरा हाग है॥ सो उपरको चले है॥ दो निचेको चलि। येक दाहिनी तरफ। येक बाई तरफ। नीचेकी है सो पाइनकी तरफ। अई। यह बाई तरफ

"Joint Project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai."

अई। बाई तरफकी रगे मैंते चार अंकुर बढे॥ येक नीचेकोचली। येक बाई तरफ चली। येक दाहिनी तरफ चली। येक उपरको चली। दाहने तरफके पावमे तो रगमेसे [illegible] अंकुर फुटे। येक निचेको गई। येक बाई तरफ गइ। येक उपरको गइ। दोरा गिलमैते दो दो फुटे। सो पिछेको गइ। तिनकी तीन तीन भइ। सो वंके लालको गइ। कमर-के असपास होके आन मिलीयाह। येक डोर भइ। फेरि वाइालेदोनोमलमैत होइके अवमनके खजानेमे आन मिली। परथ बाई कुखताके यक रगतामे दो फुटो

Joint Project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

(3)

तीनी भई सो वंकनालको आनि मिली। दुतीया दाहिनी कुखकी येक गलाम इ फुटी। ताकी दोन भई। दोइसो वंक गालको आन मिली। दुतिया दाहनी कुख येक [illegible] मठ फुटी। ताकी तीन भई। सो वंकनालको [illegible] मिली। वंकनार कीते ब्रम्हांड मे होइके + दुतीय [illegible] मे होई। पेसाब को फकनामे आन मिली। ~~प्रथम~~ प्रथम गलको कोराकि है तार गमै उपरको गई है ताको तब वरन दाहनी हाथ को गई। तहाते दो फुटी। ताकी तिनी भई। फिरी उपरको जाइके ब्रम्हांड कोमे होईके नीचेको

+ तालमे आन ~~मिली~~ वंकनाल मे होईके

Joint Project of the Rajawade Samshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

(५)

४

पावके तरफ अरुवामे आई मिली। ये सब
नसोको विरचार परमाद कर कहो।। आथरिलको
दोष। को विकार आदमीके सरीरमे छौ हरिछु
विचार।। चैत वैसाख जेठ सीत आदमीके
पेरमे रहत है। और बाद जोहे सो मगज की
मिर्गीमे रहत है।। आखाढ सावण भादो बाइ जोहे
आदमीके पेरमे रहत है।। सुर जो हे मारत चरबी
मे रहत है।। पित जो हे त्वचामे रहत है।। सीत
जो है असगज ओर मिर्गीमे रहत है। कुवारका
तक अगहन पित जो है आदमीके पेरमे रहत है।।

" Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai. "

गुर मगजकी मिगीमे रहत है। बाई उचामे रहत है। सीत मास चरवी मे रहत है। पुरुमास हा फाल्गुण उर पेटमे रहत है। पिल ~~[illegible]~~ मगजकी मिंगीमे रहत है। बाई गुहे मास चरवीमे रहत है+ येले सरीर [illegible] अस्थान रि हुविचार समझा आप उन परीक्ष्या लिखते।

+ शित बचाके पिच रहत है.

गुरके सोरंग होई पिसाबको होई तो गरमी जानीये। सुरख रंग होई तो पिसाब पीतको जानीये। जरद रंग होई तो कफ को जानीये॥ सुपेत रंग रूपे साय होय होये तो सीतको जानियो।

" Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai. "

अथ मल गरमी ॥ मलको विकार लिये होई
तो पिसाब बीचमे मैले आकार लिये भासत
है। जो उपरको फिकी होई तो... गुरके रंग
होई तो गरमी जानिये। द्वितीय मल सइ तओ
काररा बीचमे उजल होई तो गुरको सरबत के
रंग होई॥ आसपास तेल के सो रंग होई तो गरमी
जानीये। तोदुते जास पापो होई॥ ताको वोखद यह
तो मात दिल देय॥ गरम सरदने लगावे।
खुराक मात दिल देई। ओर जो बीचमे उरख होई
उपर फिका होई तो पिलते वाई जानिये।

ये यीरीरा र हवातंत्र नकरकरपाराने लिहिण्याचे राहिले.

" Joint Project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai. "

(७)

वाको वोषद सीतल दीजीये॥ ऊपरमात दिल
बाई हरता लगावे। ओर ओस बीचमै फकी
होई उपर सुरख होई तो वाई ते: पीत जानीये।
वाको वाई [illegible] वोषद खावे को देई॥
लगावेको सील [illegible] देई। बीचमे जरद पिसा
ब होय। उपर सु[illegible] होय तो कफते वाय
जानीये। वाको वोखद कफ हरता देई। वाय
हरता देई तौ कफ गरजाय। ईती गरमी के
कफ जुरा बीचमे जरद रंग होइ पिसाबको उपर
फिकी होई तो कफते गरमी जानीये। इति कफतै

"Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai."

(४)

गरमी बीचमे फुको रंग होइ। उपर पिसाबकोकुरो रंग होई। तो गरमी ने वाय जानीये। इती गरमी

बाई बीचमे कुरो रंग होई पिसाब। उपरकी फिकी होइ तो को गरमी होको हुज रंग जो होय। इति

गरमी लेतो हुः कुरो बीचमे ते कारो पिसाब होई। उपरकी फिको रंग होय तो लोहु ते गरमी कुर।

बीचमे कुरके सरबत के सौरंग होय फीको होय। उपर सुफेत रुपेको सो रंग होई तो गरमी ते शुक्र जानीये इती गरमी ते शुक्र धात विकार।

बीचमे रुपेको सोरंग होई पर कुरके सोरंग होई

" Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai. "

पर रुरके सरबत के सौरंग होय तो रुकुलेधात जानीये। गरमी विकार जानीये। इति रुकु धात गरम विकार। बीचमे फीको सरबत कै सौरंग होय तो रुकुले धात जानीये॥ उपरका रंग होई तो गरमीले सीतल विकार जानिये। इति गरमीले सीतल विकार बीचमे कासेके सोरंग होई तो सीतले गरमी विकार जानीये। इति सीतले गरमी विकार। अथ मलले विकार। जो पिसाब तेलके सोरंग होई बीचमे। उपर पैसाब कुरष रंग होय तो मैलते पित जानिये। अथ

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

मलले पित॥ जो पिसाब बिचमे सुरख होई
उपर तेलके सोरंग होयतो पित है मल
जानिये। अथामल ते विकार जो बीचमे
पिसाब तेलके सोरंग होई। उपर जरज रंग
होयतो मलते सुरु ते जानिये॥ इति मलते
सुरु दोष जानिये बीचमे रुपेके सोरंग होय तो
पिसाबको। उपरतेल के सोरंग होय तो सुरुते
मल दोष जानिये। इति सुरु मेदारव। बीचमे तेल
के सोरंग होय पेसाबके उपर कासेके सोरंग
पलते लोहु विकार जानिये। बीचमे कारो रंग होय

"Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai."

(11)

पैसाबको तौलौ विकार जानीये। इति खोदु मलजूर। बिचमे गुरके सो सरबत को रंग होई पैसाबको होय फीको होय। उपर सुपेद रंग होय तौ गरमी तो [illegible] दोष जानीये। बिचमे सुफेद रंग होय। उपर गुरके सरबतके सौरंग होय तो फीको होई तो सुऊते गरमी दोष जानीये॥ इति सुऊते गरमी दोष बीचमे सुरंग होई। ऊपर जरद रंग होई। तो पीत ते कफ जानीये। इति पित ते कफ दोख। बीचमे जरद रंग होय ऊपर सुरख रंग होई पैसाबको तो कफ ते पित जानीये॥

" Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai. "

+ बिन्चमे जरद रंग होय उपर सुरष रंग होई तो कफ ते पित जानीये॥ इति कफते पित्त दोष॥

इति कफ ते पित दोष। बीचमे खुरख रंग होय ऊपर जरद रंग होई तो पील ते कफ दोख। बीचमे जरद रंग होई ऊपर खुरख रंग होई कफ ते पील जानीये। बीचमे खुरख रंग होई पित ते वाय जानीये। इति पित दोष वाय। बीचमे पानीके सो रंग होई पेसाबको उपर खुरख रंग होय तो वाय पील जानीये। तो पित ते वाय जानीये। इति पिते दोष वाय। बीचमे पानीके सो रंग होई पेसाबको उपर खुरख रंग होय तो। उपर कासेके सो रंग होई पील ते सीत जानीये।

" Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai. "

इति पित ते कहिये। बीचमे कासेके सोरंग होई।
उपर सुरख रंग होई तो रीत ते पित जानीये॥
× इति साल वित दोष। बीचमे सुरख रंग होई तो
सिल ते पित जानीये। इति साल विल दोष। बीचमे
सुरख रंग होई तो शुक्र ते पीत जानीये। बिचमे
रुपेके सुरंग होई। उपर सुरखालिय रंग होई तो
सुक्र घात जानियो तो पितको दोष जानीये। इति
शुक्र ते पीत दोष। बिचमे सुरख लिये पिसाब
होय उपर कारो रंग होई तो पित ते लोहु जा-
नियो। इति पित ते लोहु दोष। बिचमे स्यारि

"Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai."

लिये पिसाब होई। उपर सुरख लिये होई
तो लोहुते पित दोष जानीये। इति लोहुते पित
दोष। बीचमे जरद लिये होये। उपर पानीके
सोरंग होय तो कफ ते बाई जानीये। इति कफ
ते वाई। बीचमे पानीके सोरंग होई। उपर
जरद लिये पेसाब होय तो वाईते कफ जानीये।
बीचमे पानीके सोरंग होई। उपर कासेके सोरंग
होय तो बाईते सीत दोष जानीये। बीचमे कासेके
सोरंग होय। उपर पानीके सोरंग होई तो
सीत ते वाई जानीये। इति सीत ते वाई दोष।

"Joint project of the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai."

बीचमे पानीके सोरंग होई उपर रुपेके सोरंग
होई तो पित्तके सुक्र दोष जानीये। इति वापते
सुक्र दोष जानीये। बीचमे रुपेके सोरंग होई।
उपर पानीके [illegible] होई तो सुक्रते वाय
जानीया। इति [illegible] ते वाई। बीचमे पानीके
सोरंग होई। उपर रुपेके सावको रंग होई।
उपर कारो रंग होई। तो वाईते वाई लोहु दोष
जानिये। इति वाईते लोहु दोष। बिचमे कारी
पिसाब होई उपर पानीके सोरंग होई। तो लोहु
ते वाई विकार जानिये। इति लोहुते वाई विकार जानिये

"Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan Mumbai."

बीचमे कासेके से सोरंग होई। उपर रुपेके सोरंग
होई। तो सीत ते सुक्र जानीये। इति सीत ते सुक्र
दोष जानिये। बीचमे रुपेके सोरंग होई। उपर
कासेके सोरंग होई तो सुक्र तो सीत दोष जानिये।
इति सुक्र तो सीत दोष जानीया। जो बीचमे कासेके
सोरंग होय। उपर सुरके सोरंग होई सरबतके
सोरंग होई। तो सीत ते गरमी जानीये। इति
गरमी सीत दोष। बीचमे सुरख रंग होई उपर
जरद रंग होई तो पित ते कफ जानिये। इति पित
ते कफ दोष। ~~बीचमे~~ सुरख रंग होई। उपर

"Joint project of the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai"

+ तो पित्त ते शित जानीये इति गरमी शित जो बिचमे कासे के सोरंग होई

पानी के सो रंग होई तो पितते वाई जानियो इति पितते वाई जानिये। बीचमे पानी के सोरंग होई पैसव । उपर सुरख रंग होई तो वाईते पित जाणीये वाई ते पित्त बीचमे सुरख रंग होई उपर [illegible] कासे के सोरंग होई ।+ उपरसे तैलेल सोरंग होई तो सीत ते मल दोष जानियो। बीचमे तेलके सोरंग होय तो सीत ते मल दोष जानीया। उपर कासे के सोरंग होई। तो मल ते सील जानीयो। बीचमे कासे के सोरंग होई। उपर जरद रंग होई तो सीत ते कफ दोष जानीयो बीचमे जरद रंग

Joint project of the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

होई उपर कासेके सोरंग होई। तो पीत ते सीत
जानीये। इति कफ ते सीत। जो बीचमे कासेके
सोरंग होई। उपर स्याही लिई होय तो सीत
लोहु विकार जानीये। इति शुक्र ते लोहु विकार
कृष्ण जानिये। बीचमे कृष्ण रंग होय। उपर रुपेके
सोरंग होय तो लोहु ते शुक्र विकार जानिये।
बीचमे जरद रंग होई पिसाबको। उपर कारिया
रंग होये तो कफ ते लोहु जानीये। इति कफ ते
लोहु विकार। बीचमे कृष्ण रंग होई तो लोहु ते
कफ जानिये। बीचमे जरद रंग होई उपर रुपेके

"Joint project of the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai"

19

सोरंग होई। तो कफ ते सुक्र विकार जानियो।
ले कफ ते सुक्र विकार बिचमे रापे के सोरंग
होय। उपर सरद रंग होई तो सुक्र ते कफ
विकार जानियो। इति गरमी ते त्रिदोष समाप्ता।।
।।अथ गरमी त्रिदोष की विधि लिखते।।
बीचमे सुरख सरबल के सोरंग होई वाके उपर
सुरख रंग होई तो गरमी ते मल विकार। पित्त
त्रिदोष जानियो। ये ते गरमी ते मल विकार पित
दोष। निचे ते कालो रंग होई तो जानीये मल
ते पित गरमी त्री दोष कहियो। इति मल ते

" Joint Project of the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai. "

मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com